उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्याय ग्यारह

प्रत्येक के लिए आधुनिक उपयोग

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2013 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. विविधता Variety 2

क. बाइबल आधारित दिशा निर्देश 2
1. पुराना नियम 3
2. नया नियम 5

ख. लोग और परिस्थितियाँ 8
1. उच्च निर्देश 8
2. निम्न निर्देश 9

III. ज्ञान 11

क. अगुवे 12
1. पुराना नियम 12
2. नया नियम 13

ख. समुदाय 15
1. पुराना नियम 15
2. नया नियम 16

IV. सारांश 19

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया:
व्याख्या की नींव
अध्याय ग्यारह:
प्रत्येक के लिए आधुनिक उपयोग

परिचय

यह कहानी एक जवान पासबान के लिए कही गई है जो कि अपने गिर्जाघर के दरवाजे पर खड़ा होता था और जाते समय प्रत्येक व्यक्ति का अभिवादन करता था। अब, उसकी कलीसिया के अधिकांश लोग बड़ी शिष्ठता से मुस्कराते थे और अपने अपने मार्गों पर चले जाते थे। परन्तु उस पंक्ति के अन्त में सदैव एक वृद्ध व्यक्ति रह जाता था और जो कुछ उसके मन में होता था, उससे कहता था।

"हे, जवान व्यक्ति," उसने शिकायत भरे लहजे से कहा। मुझे तुम्हारे दिए हुए सन्देश में गड़बड़ी दिखाई देती है।"

"वह क्या है?" पासबान ने पूछा।

"मैं यह जानना चाहता हूँ कि परमेश्वर का वचन मेरे जीवन के बारे में क्या कहता है, परन्तु तुमने ऐसा कुछ नहीं कहा जो मेरे ऊपर लागू होता हो।"

कुछ इसी तरह से, किसी एक निश्चित पर या किसी अन्य समय पर, हममें से बहुतों ने ऐसे सन्देशों को सुना होगा जो कि उन व्यक्तिगत् आवश्यकताओं को सम्बोधित करने में विफल हो गए होंगे जिनका सामना हम करते हैं। और हम सभों को उत्साह, व्यवहारिक नेतृत्व और उस सुधार की आवश्यकता होती है, जिसका प्रस्ताव बाइबल हमें देती है। परिणामस्वरूप, जितना अधिक हम सामान्योक्तियों या सैद्धान्तिक विषयों के साथ रहना पसंद करते हैं, उतना ही अधिक हमें सामान्य तरीके से यह सीखना चाहिए कि पवित्रशास्त्र को कैसे हम हमारे जीवनों में और अन्यों के जीवनों में व्यवहारिक तरीकों से लागू कर सकते हैं।

यह *उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव* की हमारी श्रृंखला के ऊपर हमारा ग्यारवाँ अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक "प्रत्येक के लिए आधुनिक उपयोग" दिया है। इस अध्याय में, हम देखेंगे कि हम कैसे पवित्रशास्त्र को स्वयं और अन्यों के जीवनों के ऊपर व्यक्तिगत् रूप से लागू कर करते हैं।

जैसा कि हमने अन्य अध्यायों में देखा है कि, जब कभी भी हम बाइबल को हमारे जीवनों में लागू करते हैं तो हम तीन ऐसी दूरियों को ध्यान में रखते हैं जो कि पवित्रशास्त्र के मूल श्रोताओं और आधुनिक श्रोताओं के मध्य में विद्यमान हैं: युग, संस्कृति और व्यक्तिगत् दूरी।

एक बड़े पैमाने पर, हमें उन धर्मवैज्ञानिक घटनाक्रमों के विकासों का पता लगाना चाहिए जो कि बाइबल के इतिहास में उस समय घटित हुई जब यह एक बड़े युग से दूसरे में स्थानांतरित हुई। और एक थोड़े से छोटे पैमाने पर, हमें उन समानताओं और विभिन्नताओं को ध्यान में रखना चाहिए जो कि परमेश्वर की ओर से बाइबल के समयों में रेखांकित की हुई संस्कृतियों और आधुनिक संस्कृतियों के लिए रूपरेखित की गई हैं। और इस रूपरेखा के भीतर रहते हुए, हमें साथ ही उन व्यक्तिगत् समानताओं और विभिन्नताओं को भी ध्यान में रखना चाहिए जो कि पवित्रशास्त्र के मूल श्रोताओं और आधुनिक श्रोताओं के मध्य में हैं। इस अध्याय में, हम मौलिक रूप से आधुनिक उपयोग के हमारे इस अन्तिम आयाम की ओर देखेंगे जब हम इस बात की ओर ध्यान देते हैं कि कैसे पवित्रशास्त्र को हममें से प्रत्येक की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करना चाहिए।

परमेश्वर की उसके वचन के लिए यह मंशा है कि वह हमारे जीवनों की प्रत्येक बात को प्रभावित करे, अर्थात् जिस तरह से हम फिल्मों को देखते हैं और गीतों को सुनते हैं और दोस्ताना मुलाकातों को करते चले जाते हैं। जिस तरह से हम सूर्यास्त और पाप को देखते हैं, उन सबकी मंशा उन तरीकों को प्रभावित करने के लिए है जिसमें परमेश्वर ने

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

स्वयं को हम पर प्रभावित किया है। और उनकी हमारे मनों, हमारे हृदयों और हमारी गतिविधियों के ऊपर प्रभाव पड़ने की आवश्यकता है। बाइबल को वास्तव में हमारे जीवनों को संतृप्त कर देना चाहिए और हमें इस तरह की बाइबल आधारित समझ देना चाहिए जहाँ पर हम हमारे प्रत्येक दिन के प्रत्येक मिन्ट में परमेश्वर का अनुसरण करते हुए उसके विचारों के बारे में ही सोचें। जिसे अन्ततः सहज और स्वाभाविक बनने की आवश्यकता है, परन्तु बाइबल में हमारे जीवनों के लिए एक बहुत ही समग्र तरीके से प्रभाव डालने की मंशा की गई है।

- डॉ. ऐरिक थियोनॉस

प्रत्येक व्यक्ति के लिए आधुनिक उपयोग तक पहुँचने के लिए बहुत से तरीके हैं, परन्तु हमारे इस अध्याय में, हम दो मुख्य विषयों का निपटारा करेंगे। सर्वप्रथम, हम यह देखेंगे कि कैसे परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र के हमारे आधुनिक उपयोग के लिए विविधताओं को ठहराया है। और दूसरा, हम इस बात का पता लगाएंगे कि कैसे परमेश्वर ने उन तरीकों को हमारे लिए प्रदान किया है जिनमें हम बाइबल के हमारे और अन्यों के उपयोग के लिए ज्ञान को प्राप्त करें। आइए हम इनमें से प्रत्येक विषय की ओर, विविधता में व्यक्तिगत् उपयोग के साथ देखना आरम्भ करें।

विविधता

किसी एक निश्चित या किसी अन्य समय पर, हममें से अधिकांश ने किसी तरह की कोई मशीन या यान्त्रिक औजार को चलाने के लिए हस्तपुस्तिका में दिए हुए किसी एक निर्देश को पढ़ा होगा। अब मशीन चलाने के लिए दी गई हस्तपुस्तिका में साधारण प्रक्रियाओं के बारे में प्रत्येक वर्णन दिया हुआ होता है ताकि प्रत्येक व्यक्ति एक ही तरीके से अक्षरशः कार्य को संचालित करे: "ऐसा करें, ऐसा करें, ऐसा करें" और प्रत्येक वैसा ही करेगा जैसा कि उस पुस्तिका में दिए अनुसार करना है। परन्तु क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि कोई एक व्यक्ति उस निर्देशपुस्तिका में मशीन चलाने के लिए एक वर्णनात्मक विषयों की व्याख्या को लिख रहा है जैसे कि कृषि का कार्य, एक परिवार का पालन पोषण या एक व्यवसाय को चलाना? कदापि नहीं है। ये कार्य इतने जटिल हैं कि इनका वर्णन कदम-दर-कदम नहीं दिया जा सकता है। और भिन्न लोगों को भिन्न तरीकों से इन्हें करना होता है जब वे विभिन्न तरह की परिस्थितियों का सामना करते हैं।

कई बार हम यह आशा करते हैं कि बाइबल एक मशीन को चलाने के लिए दी गई निर्देशपुस्तिका की तरह होनी चाहिए थी जो कि प्रत्येक व्यक्ति को अनुसरण करने के लिए विशेष कदमों के बारे में जानकारी दे देती। परन्तु प्रत्येक जो बाइबल से परिचित है वह जानता है कि यह ऐसा नहीं करती है। इसकी अपेक्षा, बाइबल कुछ अत्यन्त जटिल कल्पनाशील मुद्दों के साथ - कदम-दर-कदम निर्देशों के लिए जटिलता से अत्याधिक परे विषयों का निपटारा करती है। और इससे भी अधिक, बाइबल की रूपरेखा इस तरह से की गई है कि यह विभिन्न परिस्थितियों में रहने वाले विभिन्न लोगों के द्वारा उपयोग की जा सके। इन्हीं कारणों से, पवित्रशास्त्र कई विविध तरीकों में प्रत्येक व्यक्ति के ऊपर लागू होने के लिए लिखे गए थे।

प्रत्येक व्यक्ति में विविधता को समझने के लिए, हम सबसे पहले स्वयं बाइबल आधारित निर्देशों के भीतर दी हुई विविधता पर ध्यान देंगे। और दूसरा, हम यह देखेंगे कि क्यों यह भिन्न निर्देश विभिन्न तरीकों से विभिन्न लोगों और परिस्थितियों के ऊपर लागू किया जाना चाहिए। बाइबल आधारित निर्देशों की विविधता पर सबसे पहले ध्यान दें।

बाइबल आधारित दिशा निर्देश

जैसा कि कुछ पल पहले ही सुझाव दिया गया है, कदम-दर-कदम निर्देश पुस्तक के विपरीत, कृषि, परिवार, व्यवसाय और ऐसी ही अन्य बातों के ऊपर लिखी हुई पुस्तकें उनके पाठकों को व्यापक रूप से कई तरह के विशिष्ट निर्देशों को देती हैं। सामान्य तौर पर, इस तरह की पुस्तकें कुछ ऐसे सार्वभौमिक सिद्धान्तों को परिचित कराती हैं जिन्हें हर किसी के द्वारा सभी तरह की परिस्थितियों में पालन किया जाना चाहिए। वे साथ ही कुछ सामान्य दिशा निर्देशों को भी प्रदान करते हैं जिन्हें लगभग सभी परिस्थितियों पर लागू किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, वे निरन्तर विशिष्ट स्थितियों से निपटने

के लिए निर्देशों की एक श्रेणी को प्रदान करते हैं जो कि समय-समय पर उत्पन्न हो सकती हैं। अन्त में, इस तरह की पुस्तकों में अध्ययन के लिए ऐसी घटनाएं दी गई होती हैं जो कि अक्सर सफलता और विफलता के उदाहरणों को प्रकट करती हैं।

कई तरीकों से, पवित्रशास्त्र एक ही तरह के निर्देशात्मक विविधता को दर्शाते हैं। वे कुछ ऐसे सार्वभौमिक सिद्धान्तों को प्रत्येक के लिए प्रदान करते हैं जिनका हर समय अनुसरण किया जा सकता है, विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न लोगों के लिए सामान्य दिशा निर्देश, विशेष लोगों और परिस्थितियों के लिए विशिष्ठ दिशा निर्देश और ऐसे लोगों के उदाहरण जो कि पवित्रशास्त्र के दिशा निर्देशों का पालन करने में सफल या विफल हुए हैं।

बाइबल आधारित दिशा निर्देशों की इस श्रृंखला को दो तरीकों से देखने में यह हमें सहायता प्रदान करेगा। सर्व प्रथम हम यह देखेंगे कि कैसे इस तरह के दिशा निर्देश पुराने नियम में प्रकट होते हैं, और फिर इस बात पर ध्यान देंगे कि कैसे ये दिशा निर्देश नए नियम में भी प्रकट होते हैं। आइए पुराने नियम के साथ आरम्भ करें।

पुराना नियम

यह बात इतनी अधिक अवास्तविक है कि, आधुनिक पाठकों की यह धारणा है कि परमेश्वर ने प्रत्येक इस्राएली से यह चाहा कि वह बाइबल की उत्पत्ति से लेकर मत्ती तक दी गई व्यवस्थाओं और शिक्षाओं को स्मरण कर ले और तब फिर वह इन दिशा निर्देशों को एक ही क्षण में दी गई सूचना में लागू कर दे। परन्तु पुराने नियम में व्यवस्था की सूची किसी के लिए भी इन सभों को स्मरण करने, और सभों के आज्ञा पालन के लिए बहुत अधिक लम्बी थी। और इस चुनौती का निपटारा करने के लिए, इस्राएल के शास्त्रियों ने पुराने नियम के दिशा निर्देशों की प्राथमिकताओं को समझने की कोशिश की। कौन सी आज्ञा प्रत्येक परिस्थिति में हर एक व्यक्ति को ध्यान में रखने की आवश्यकता थी। कौन से दिशा निर्देशों को जीवन के अधिकतर परन्तु सभी क्षेत्रों में लागू करने की आवश्यकता नहीं थी? कौन सी आज्ञाएँ इतनी ज्यादा विशेष थीं कि उन्हें मात्र कभी कभी ही उपयोग किया जाना चाहिए था? कुछ शास्त्रियों ने इन्हें लागू करने के लिए इस या उस तरीके में तर्क दिया। परन्तु वे सभी जानते थे कि प्राथमिकताओं को स्थापित करना आवश्यक था। मत्ती 22:36 में, पुराने नियम की शिक्षाओं की प्राथमिकता ने व्यवस्था के एक विशेषज्ञ को यीशु से इस प्रश्न को पूछने के लिए नेतृत्व प्रदान किया:

> **हे गुरू; व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है? (मत्ती 22:36)।**

यीशु ने 37-40 आयतों में इसका यों उत्तर दिया:

> **"तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।" बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, "कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।" ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं (मत्ती 22:37-40)।**

इस जाने-पहचाने दृश्य में, यीशु ने बाइबल की सब आज्ञाओं पर उसके अनुयायियों को अपना अधिकारिक दृष्टिकोण प्रदान किया। उसने व्यवस्थाविवरण 6:5 में से "परमेश्वर के साथ प्रेम रख" के आदेश की पहचान व्यवस्था के सबसे उच्च आदेश के रूप में कराई। और बिना पूछे ही, उसने तुरन्त इसमें दूसरी सबसे महान् आज्ञा: "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख" को लैव्यव्यवस्था 19:18 से जोड़ दिया। इस दृष्टिकोण से, ये दो आज्ञाएँ बाइबल के प्रत्येक दिशा निर्देश के ऊपर प्राथमिकता को रखती हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, परमेश्वर स्वयं और मनुष्य जाति परमेश्वर के स्वरूप में बाइबल में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। परन्तु यह स्मरण रखना सहायता प्रदान करता है कि यीशु ने इन दो आज्ञाओं को इकट्ठा इसलिए रख दिया

क्योंकि वे दोनों एक ही निशाने को साझा करते हैं। वे दोनों प्रेम के बारे में बोलते हैं। इन सभों के अतिरिक्त, हमें परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए और हमें अपने पड़ोसी से प्रेम करना चाहिए। परिणामस्वरूप, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि यीशु ने इन आज्ञाओं को सभी अन्यों के ऊपर प्राथमिकता के रूप में दिया। वे हृदय के गहन विषयों – अर्थात् व्यवहार, प्रतिबद्धताओं, मंशा और लक्ष्यों के साथ निपटारा करते हैं जिनकी अपेक्षा परमेश्वर उसके लोगों से करता है। यीशु के दृष्टिकोण के प्रभाव से, परमेश्वर को प्रेम करना और पड़ोसी को प्रेम करना पुराने नियम के सार्वभौमिक सिद्धान्त हैं, ये ऐसी आज्ञाएँ हैं जो कि प्रत्येक व्यक्ति को पालन करनी हैं, चाहे कुछ भी क्यों न हो जाए।

एक शास्त्री ने यीशु से यह पूछा था कि, "बाइबल में कौन सी आज्ञा बड़ी है?" और उसने उत्तर दिया – और यह अत्यन्त महत्वपूर्ण उत्तर है - "पहली और मुख्य आज्ञा तो यही है: तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।" और फिर उसने उससे कहा कि, "उसी के समान यह दूसरी भी है: कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं।" परिणामस्वरूप स्पष्ट रूप से ये दो महत्वपूर्ण आज्ञाएँ हैं। उसने इन्हें समानता में नहीं रखा। पहली और सबसे महत्वपूर्ण यह है, हमें परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए। हमारी सबसे प्रथम निष्ठा परमेश्वर के पास जानी चाहिए। वह हमारा सृजनहार, हमारा उद्धारक है। वह हमारी ढाल और हमारा बड़ा ईनाम है। सब कुछ परमेश्वर के ऊपर केन्द्रित है। और इसलिए, हमें परमेश्वर को अपने पूरे हृदय के साथ प्रेम करना चाहिए और यह प्रत्येक दिन की प्राथमिकता होनी चाहिए। परन्तु यीशु वहीं पर नहीं रूकता है। वह यह नहीं पूछता है, "इन दोनों आज्ञाओं में से शीर्ष पर कौन सी है?" शास्त्री उससे यह पूछता है कि, "इन में से बड़ी कौन सी है?" परन्तु यीशु ने निश्चित रूप से ही दूसरी आज्ञा को दिया था और वह यह थी कि अपने पड़ोसी को स्वयं जैसा प्रेम करना। और इसलिए दोनों आपस में सम्बन्धित और सम्पर्क में हैं। हम परमेश्वर को प्रेम किए बिना लोगों को प्रेम नहीं कर सकते हैं जो कि परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं और विशेषकर वे जिन्हें छुड़ाया गया, परमेश्वर के परिवार में गोद लिया गया है।

- डॉ. ऐन्ड्रियू डेविस

ये दो आज्ञाएँ यीशु के लिए इतनी ज्यादा महत्वपूर्ण हैं कि उसने इसमें यह जोड़ दिया कि, "ये सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता" – पूरे पुराने नियम की ओर इशारा करने का एक तरीका - "इन्हीं दो आज्ञाओं के ऊपर टिके हुए हैं।" अब, हमें यहाँ पर सावधान होना चाहिए क्योंकि कई व्याख्याकारों ने इसका यह अर्थ निकाला है कि यीशु के अनुयायियों को चाहिए कि वे पुराने नियम के सभी दिशा निर्देशों को छोड़ दें या फिर उनकी अपेक्षा परमेश्वर से प्रेम और पड़ोसी से प्रेम करने के द्वारा करें। परन्तु इसके बिल्कुल विपरीत बात सत्य है।

न केवल यीशु ने मत्ती 22 में इन दो बड़ी आज्ञाओं को पहचाना, अपितु मत्ती 5:19 में भी, उसने अपने अनुयायियों को इनका पालन करने के लिए शिक्षा दी जिन्हें उसने आज्ञाओं में "छोटी से छोटी" कह कर पुकारा। सुनिए वहाँ उसने क्या कहा है:

इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा (मत्ती 5:19)।

ये आयत और अन्य प्रसंग स्पष्ट कर देते हैं कि यीशु के अनुयायियों को सभी आज्ञाओं का पालन, छोटी से लेकर बड़ी तक का करना था।

इसके अतिरिक्त, मत्ती 23:23 में, यीशु ने जब फरीसियों को फटकारा तो उसने बड़ी से लेकर छोटी आज्ञाओं के मध्य दिए हुए दिशा निर्देशों की एक श्रृंखला को भी स्वीकार किया:

हे कपटियों! तुम पर हाय; तुम पोदीने और सौंफ और जीरे का दसवाँ अंश देते हो.. परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों को छोड़ दिया है- न्याय, दया और विश्वासयोग्यता। चाहिये तो यह था कि इन्हें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते (मत्ती 23:23)।

ध्यान दीजिए यीशु ने "न्याय, दया और विश्वासयोग्यता" को "व्यवस्था की गम्भीर बातों" के रूप में संकेत दिया, और उसने इनकी तुलना "पोदीने और सौंफ और जीरे का दसवाँ अंश" वाले कम महत्वपूर्ण विषयों के साथ की। एक बार फिर से, उसने उसके अनुयायियों को संकेत दिया कि उन्हें पुराने नियम की सभी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए, परन्तु यह उन्हें मन की सही प्राथमिकता के साथ करना चाहिए था।

यह पुराने नियम में परमेश्वर के दिशा निर्देशों को चलित रूप में देखने में हमारी सहायता करता है। चलित प्रक्रिया के शिखर पर आपके पास, ये सर्वोच्च आज्ञाओं वाले सार्वभौमिक सिद्धान्त हैं: "अपने प्रभु परमेश्वर को प्रेम कर" और "अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर।" हमें कहा गया है कि ये "दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं।"

इनके साथ ही अतिरिक्त सिद्धान्त भी सम्मिलित हैं जो यह संकेत देते हैं कि कैसे इन सर्वोच्च आज्ञाओं को पालन किया जाना चाहिए। इसमें दस आज्ञाएँ और न्याय, दया और विश्वासयोग्यता जैसे सिद्धान्त के साथ पुराने नियम के सामान्य दिशा निर्देश पाए जाते हैं।

इन व्यापक सिद्धान्तों के साथ ही ये "छोटी सी छोटी आज्ञाएँ" भी सम्मिलित हैं। ये पुराने नियम में अपेक्षाकृत विशिष्ट निर्देश हैं जो यह संकेत देते हैं कि कुछ निश्चित परिस्थितियों में विभिन्न लोगों को उच्च आदेशों का पालन कैसे करना है। उदाहरण के लिए, लेवियों के लिए आराधना करने के लिए दिशा निर्देश, भजन संहिता के लिए निर्देश, और प्रज्ञा साहित्य की पुस्तकों में जैसे कि अय्यूब और नीतिवचन की पुस्तकें और यशायाह और यहेजकेल जैसे भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में बहुत से निर्देश मिलते हैं।

चलित प्रक्रिया के निचले स्थान पर, असंख्य ऐतिहासिक उदाहरण मिलते हैं जो कि ज्यादातर पुराने नियम की कहानियों और भजन संहिता और प्रज्ञा साहित्य में भी प्रकट होते हैं। ये प्रसंग अक्सर उन तरीकों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हैं जिनमें विशेष पुरूषों और स्त्रियों ने या तो उनकी विशिष्ट परिस्थितियों में आज्ञा का पालन किया या फिर अवहेलना की।

ये वर्गीकृत प्रबन्ध उन कई आयामों को समझने में हमारी सहायता करता है कि कैसे यीशु यह चाहता था कि उसके शिष्य निर्देशों की पूरी श्रृंखला का निपटारा कर सकें जो कि पुराने नियम में प्रकट होती हैं।

पुराने नियम की इस पृष्टिभूमि को ध्यान में रखते हुए, आइए हम नए नियम के बाइबल आधारित दिशा निर्देशों की विविधता की ओर ध्यान दें।

नया नियम

यह देखना प्रत्येक के लिए आसान है कि नया नियम पुराने नियम से बहुत ज्यादा छोटा है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि नए नियम के लेखकों ने परमेश्वर के लोगों के लिए दिशा निर्देशों की गिनती को कम कर दिया है। सच्चाई तो यह है कि, आरम्भिक कलीसिया की शिक्षाओं की सूची वास्तव में प्राचीन इस्राएल की सूची से ज्यादा लम्बी है। नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम को प्रतिस्थापित नहीं किया। इसकी अपेक्षा, उन्होंने पुराने नियम के साथ इसे जोड़ दिया। अब, नए नियम में जोड़ दिए गए अतिरिक्त दिशा निर्देश एक महत्वपूर्ण प्रश्न को उत्पन्न करते हैं। क्यों नए नियम के लेखकों ने स्वयं के दिशा निर्देशों को पुराने नियम की शिक्षाओं के साथ जोड़ दिया?

जैसा कि हमने पहले किसी एक अध्याय में देखा, नए नियम के लेखक नहीं चाहते थे कि मसीह के अनुयायी पुराने नियम के किसी भी दिशा निर्देश को भूल जाएँ, अपितु वे यह भी नहीं चाहते थे कि वे ऐसा जीवन यापन करें कि मानो वे पुराने नियम में समय व्यतीत कर रहे हों। परिणामस्वरूप, वे चाहते थे कि उनके श्रोता अतीत के तरीकों का अनुसरण करने से बचें, इसलिए उन्होंने आरम्भिक कलीसिया को यह शिक्षा दी कि कैसे पुराने नियम के दिशा निर्देशों को नई वाचा के युग में लागू करना है।

नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के दिशा निर्देशों को स्वीकार किया, परन्तु साथ ही इस समझ के साथ कि जब यीशु पहली बार आया था, तो वह अपने साथ भविष्यद्वाणी किए हुए मसीह के राज्य के उदघाटन को लेकर आया था। उन्होंने साथ ही यह समझ लिया था कि पुराने नियम के दिशा निर्देशों को पवित्र आत्मा के कार्यों के द्वारा जब वह परमेश्वर के राज्य को नई वाचा के युग की निरन्तरता में विस्तारित करता है, को देखना चाहिए। और उन्होंने पुराने नियम को, जो कुछ मसीह तब करेगा जब वह अपनी महिमा में भविष्यद्वाणी किए हुए मसीह के राज्य के शिरो-बिन्दु अर्थात् पराकाष्ठा में पुन: आएगा, के शब्दों में देखा।

समस्त स्थानों में, नए नियम के लेखकों ने यह जोर दिया कि मसीह के अनुयायियों को उन प्राथमिकताओं को बनाए रखना चाहिए जिन्हें यीशु ने स्थापित किया था।

सबसे पहले स्थान पर, परमेश्वर के लिए प्रेम और पड़ोसी के लिए प्रेम के सार्वभौमिक सिद्धान्त निरन्तर सर्वोच्च आदेश के रूप में बने रहे हैं, जैसा कि हम लूका 10:27, 1 कुरिन्थियों 13:13 और 1 यहून्ना 4:21 जैसे स्थानों में देखते हैं। चाहे कुछ भी क्यों न हो, नए नियम के विश्वासियों को उनके हृदयों को प्रेमी परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से प्रेम करने के लिए देना है।

दूसरे स्थान पर, नए नियम के लेखकों ने दस आज्ञाओं और पुराने नियम के मत्ती 19:18 और रोमियों 13:8-10 जैसे प्रसंगों में दिए हुए सामान्य दिशा निर्देशों के प्रति भी ध्यान को आकर्षित किया है।

तीसरे स्थान पर, नए नियम के लेखकों ने विशिष्ठ दिशा निर्देशों को विशिष्ठ लोगों और परिस्थितियों के लिए दिया जैसा कि हम 1 कुरिन्थियों 14 और 2 तीमुथियुस 4:1-5 को पढ़ते हैं।

और चौथे स्थान पर, हम असंख्य लोगों के ठोस ऐतिहासिक उदाहरणों को सुसमाचारों और प्रेरितों के काम की पुस्तक और अन्य भिन्न प्रसंगों में देखते हैं, जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन किया और अवहेलना की।

जैसा कि हम देखते हैं, पवित्रशास्त्र की विषय-वस्तु बहुत ज्यादा जटिल है, और बाइबल में वहाँ परमेश्वर के लोगों के लिए कई तरह के भिन्न दिशा निर्देशों को दिया गया है, जिसमें से प्रत्येक निर्देश को हम सम्भवत: हमारे मनों में सबसे आगे की ओर नहीं रख सकते हैं। परन्तु नया नियम यह देखने में हमारी सहायता करता है कि कैसे हमें इन विभिन्न आदेशों को पालन करना चाहिए।

एक तरफ तो, हमें उन प्राथमिकताओं को संभालने की आवश्यकता है जिन्हें यीशु ने उसके शिष्यों को पालन करने के लिए सिखाया। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं, तो हम पवित्रशास्त्र के विवरण में ही खो जाएंगे, कुछ ऐसे जैसे यीशु के दिनों में फरीसियों ने किया। विशेष दिशा निर्देश निश्चित मुद्दों को निपटारा करने के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं, परन्तु हमारा ध्यान ज्यादातर अधिक महत्वपूर्ण मुद्दों की ओर जाना चाहिए – इन सबके ऊपर परमेश्वर और पड़ोसी को प्रेम करना। प्रत्येक दिन का प्रत्येक क्षण इन दोनों सर्वोच्च आदेशों के द्वारा प्रेरित और निर्देशित होना चाहिए।

दूसरा, इन प्राथमिकताओं के होने पर भी, हमें इस तरीके से या उस तरीके से यह स्मरण रखना चाहिए, कि बाइबल आधारित प्रत्येक दिशा निर्देश मसीह के प्रत्येक अनुयायी के लिए प्रासंगिक है। जब हमारा सामना भिन्न तरह के विकल्पों से होता है, तो हमें न केवल पवित्रशास्त्र के सार्वभौमिक सिद्धान्तों से शिक्षा को प्राप्त करना है, अपितु हमें कई सामान्य दिशा निर्देशों, विशिष्ठ विस्तृत निर्देश और ठोस उदाहरणों से भी प्राप्त करना चाहिए जिन्हें हम बाइबल में पाते हैं जब हम परमेश्वर की सेवा विश्वासयोग्यता से करना चाहते हैं।

वाचा में, जब परमेश्वर उसके लोगों को उसके स्वभाव और चरित्र की शिक्षा दे रहा है, तो वह तीन तरह की व्यवस्था को देता है। वहाँ पर नैतिक व्यवस्था है, जो कि सामान्य तौर पर अबाध रूप से बनी रहती है, और वह हर समय के लिए है। वहाँ पर वैधानिक अर्थात् दीवानी कानून भी हैं जिनमें शाश्वत सिद्धान्त को समय-की-अवस्था में बने रहने वाले ढाँचे में रखा गया है। मैं सदैव संक्षेप में बैलों को मारने से सम्बन्धित व्यवस्था को उपयोग करना पसन्द करता हूँ क्योंकि मेरे पास बैल नहीं हैं। मैं ऐसी व्यवस्था को चाहता हूँ जो मुझ पर लागू नहीं होती है। सिद्धान्त वहाँ पर यह है कि, यदि आप नहीं जानते कि बैल कठोर है, और आप उस पर लगाम नहीं लगाते हैं, और वह आपके पड़ोसी को मार देता है, तो आप हत्यारे माने जाते हैं। दूसरी तरफ, यदि आपके पास उस बैल के विनम्र स्वभाव के बारे में पूछने के लिए कोई प्रश्न नहीं है, और आपका उसके ऊपर कोई नियन्त्रण नहीं था, और एक दिन

वह उन्मत होता हुआ चला जाता है और आपके पड़ोसी को मार देता है, तो आप इसके जिम्मेदार नहीं हुए। मेरे पास बैल नहीं है; मेरे पास एक कार है। यदि मैं जानता हूँ कि इसकी ब्रेकें कमजोर हैं और इन्हें ठीक करने के लिए मैं कुछ नहीं करता हूँ, और मैं आपको मार देता हूँ, तो जहाँ तक बाइबल का सम्बन्ध है, मैं एक हत्यारा हुआ। परिणामस्वरूप, सिद्धान्त क्या है? सिद्धान्त यह है कि ज्ञान दायित्व है। इस तरह से, वैधानिक व्यवस्था में, मुझे उन सिद्धान्तों का सार निकालना होगा और उन्हें अपने जीवन के ऊपर लागू करना होगा। तीसरी तरह की व्यवस्था अनुष्ठानिक है, और मौलिक रूप से आराधना के तरीकों के ऊपर लागू होती है, और परमेश्वर इन चीजों को शाश्वत सत्यों को सिखाने के लिए उपयोग कर रहा है। परिणामस्वरूप, उदाहरण के लिए, वह कहता है कि, सुअर नहीं खाना चाहिए क्योंकि यह आपको अशुद्ध कर देगा। ठीक है, सुअर हमें अशुद्ध नहीं करता है। यीशु इसे बिल्कुल स्पष्ट करता है। जो कुछ आपके मुँह के द्वारा आपके अन्दर जाता है वह आपको अशुद्ध नहीं करता है। इसलिए प्रश्न यह नहीं है कि, "क्या आप सुअर का माँस खाते हैं या नहीं?" प्रश्न यह है कि क्या आपने मसीह को, पवित्र आत्मा के द्वारा, अपने अशुद्ध हृदय में कार्य करने की अनुमति दी है? इस कारण, मैं अनुष्ठानिक व्यवस्थाओं का पालन नहीं करता हूँ। वे वस्तुनिष्ठ शिक्षाएँ हैं। जब एक बार आप शिक्षा को प्राप्त कर लेते हैं, तो आपको और ज्यादा वस्तुनिष्ठों की आवश्यकता नहीं रहती है।

-डॉ. जॉन औसवाल्ट

जब आप आज्ञाओं के ऊपर ध्यान देते हैं जो कि पवित्रशास्त्र में पाई जाती हैं, तो आप समझना आरम्भ करते हैं कि वहाँ पर आज्ञाओं का एक बड़ा समूह है जिन्हें विभिन्न कारणों से दिया गया है...यदि आप प्रेरितों के काम 15 में पाई जाने वाली यरूशलेम की महासभा के ऊपर ध्यान दें, जहाँ पर यह प्रश्न आया था कि, "मूसा की व्यवस्था में दी गई आज्ञाओं के सम्बन्ध में अन्यजातियों को क्या करना चाहिए?" तो इस्राएल की कलीसिया के अगुवे इसके ऊपर पूरी तरह से स्पष्ट थे। उन्होंने कहा कि, "चेलों की गरदन पर ऐसा जूआ न रखो, जिसे न हमारे बापदादे उठा सके थे और न हमने उठाया, परन्तु हम यह कहते हैं कि वे इनसे परे रहें..." और उन्होंने उनको वस्तुओं की सूची दी – मूरतों की पूजा, अनैतिक व्यभिचार, या ऐसा मांस खाना जो कि मूरतों के आगे बलि किया हुआ था या लहू को पीना। इन सभों का लेना देना विश्वास की वह दृढ़ता है जिसका केन्द्र दिल की ऐसी गहराई है जहाँ पर परमेश्वर हमसे नैतिकता की मांग करता है। परिणामस्वरूप, यहाँ तक कि पवित्रशास्त्र में भी उस तरीकों को देखते हैं जिसमें परमेश्वर की आज्ञाएँ भिन्न तरह से व्यवहार कर रही हैं क्योंकि इस्राएल की वाचा में भी आपके पास एक तरह की आज्ञा है, परन्तु वाचा की ये सारी आज्ञाएँ हमारे जीवनों की केन्द्रीय नैतिक चिंता की ओर ध्यान नहीं देती है जिन्हें परमेश्वर वास्तव में हमसे चाहता है। और अन्त में, यीशु स्वयं, जब उससे इस प्रश्न को पूछा गया कि, दो सर्वोच्च आज्ञाएँ कौन सी हैं, तो यहाँ यीशु ने यह कहा कि, यदि आप सभों का सार निकालना चाहते हैं, तो यह कुछ तरह से मिलता है, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख, और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।"

-डॉ. स्टीव ब्लैकमोर

यह देख लेने के बाद कि पवित्रशास्त्र के व्यक्तिगत् उपयोग में विविधता कैसे बाइबल आधारित निर्देशों की विभिन्नता के साथ सम्बन्धित है, आइए हम दूसरे तथ्य की ओर मुड़ें जो कि उपयोग में उस विविधता की ओर: जिसमें भिन्न लोग और परिस्थितियाँ सम्मिलित हैं की ओर नेतृत्व प्रदान करता है। हम कुछ ऐसी बातों का पुनः निरीक्षण करने के द्वारा आरम्भ करेंगे जिन्हें हमने पहले के अध्यायों में देखा था।

लोग और परिस्थितियाँ

जैसा कि आपको स्मरण होगा, परमेश्वर ने सदैव उसके लोगों को सांस्कृतिक विविधता की ओर पवित्रशास्त्र के द्वारा अपनी इच्छा और सामान्य प्रकाशन के द्वारा – स्वयं के प्रकटन और लोगों और परिस्थितियों में उसकी इच्छा को प्रकट करने के द्वारा प्रकाशित किया है। इस तरीके से, परमेश्वर ने सांस्कृतिक विभिन्नता को उसके लोगों में कुछ सीमा तक ठहराया है।

कई तरह से, हमारे व्यक्तिगत् जीवनों के लिए भी ऐसी बातें सत्य हैं। परमेश्वर ने उसकी इच्छा को पवित्रशास्त्र में सम्मिलित कई विभिन्न तरह के दिशा निर्देशों के द्वारा प्रकाशित किया है, परन्तु इन दिशा निर्देशों को अन्य और स्वयं के जीवनों पर लागू करने के लिए, हमें परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन के प्रकटन को विभिन्न लोगों और परिस्थितियों में ध्यान रखना होगा।

हम देखते हैं कि कैसे लोगों और परिस्थितियों के बीच भिन्नतायें यीशु के दिशा निर्देशों के वर्गीकरण की ओर मुड़ने के द्वारा व्यक्तिगत् उपयोग को प्रभावित करती हैं। सादगी के लिए, हम दिशा निर्देशों को चार श्रेणियों में "उच्च" या ज्यादा सामान्य बाइबल आधारित निर्देश और "निम्न" या ज्यादा विशिष्ट बाइबल आधारित निर्देशों में विभाजित करेंगे। आइए उच्च बाइबल आधारित निर्देशों के साथ आरम्भ करें।

उच्च निर्देश

बाइबल के उच्च निर्देशो में दोनों अर्थात् सार्वभौमिक सिद्धान्त और सामान्य दिशा निर्देश सम्मिलित हैं। जैसा कि हमने देखा, इस तरह के निर्देशों की प्राथमिकता अन्यों के ऊपर है क्योंकि वे ज्यादा विस्तृत रूप से लागू होते हैं। परन्तु इस पर भी, उन्हें परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन के आलोक में विभिन्न तरीकों में लागू होना चाहिए।

एक तरफ तो, बाइबल आधारित उच्च सिद्धान्तों को लागू करने के लिए, हमें उस व्यक्ति के उन गुणों तक पहुँचना चाहिए जो इसमें सम्मिलित है। हमें इन बातों जैसे व्यक्ति की आत्मिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, योग्यता, उम्र और लिंग का लेखा जोखा रखना चाहिए। इन या अन्य गुणों को जानकारी हमें इस बात को समझने में सहायता करती है कि कैसे पवित्रशास्त्र के उच्च सिद्धान्त व्यक्ति की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करना चाहिए।

कल्पना कीजिए कि मैं एक कमरे में जाता हूँ और अपने मित्रों के एक समूह से कुछ प्रश्नों को पूछता हूँ। सर्व प्रथम, मैं पूछता हूँ कि, "क्या आप विश्वास करते हैं कि हम सभों को सही कार्य करना चाहिए?" ठीक है, स्वाभाविक रूप से हो सकता है कि सभी यह उत्तर दें कि "इसमें कोई सन्देह नहीं है, ऐसा करना चाहिए।" परन्तु तब इससे सम्बन्धित दूसरा प्रश्न आता है, "ठीक है तब, जब आज आप इस कमरे को छोड़ देंगे तो आप में से प्रत्येक क्या करेगा?" अब, हम इस बात पर आश्चर्यचकित रह जाएंगे कि प्रत्येक व्यक्ति सही कार्य को करने जा रहा है, परन्तु भिन्न तरीकों से। "मैं अपने घर अपने बच्चों की देखभाल करने के लिए जा रहा हूँ" हो सकता है कि एक व्यक्ति उत्तर दे। या, "मैं दुकान पर कुछ भोजन खरीदने के लिए जा रहा हूँ।" सच्चाई तो यह है कि हम उस समय आश्चर्यचकित हो जाएंगे यदि उन सभों ने अक्षरश: एक जैसे तरीके से ही ठीक कार्य को करने की योजना बनाई हो। और इसे समझना कठिन नहीं है कि क्यों। सामान्य दिशा निर्देश जैसे, "सही कार्य करो" को भिन्न लोगों और परिस्थितियों पर विविध तरीकों से लागू किया जाता है।

हमने पहले ही ध्यान दिया है कि सार्वभौमिक सिद्धान्त "अपने पड़ोसी को अपने जैसा प्रेम कर" लैव्य. 19:18 में एक ऐसा दिशा निर्देश दिया गया है जो कि प्रत्येक व्यक्ति के ऊपर प्रत्येक परिस्थिति में लागू होता है। परन्तु हम यह भी जानते हैं कि परमेश्वर सभी लोगों से अक्षरश: इसी तरीके से उसके आदेश को पालन किए जाने की अपेक्षा नहीं करता है। एक प्रौढ़ हो सकता है कि किसी एक विशेष तरीके से प्रेम को प्रकट करे, जबकि एक बड़ा बच्चा प्रेम को किसी अन्य तरीके से प्रकट करे। एक धनी व्यक्ति और एक गरीब व्यक्ति हो सकता है कि प्रेम को अन्यों पर भिन्न तरीकों से प्रकट करें। प्रत्येक व्यक्ति की क्षमताएँ, कमजोरी, अनुभव, आत्मिक स्थिति और ऐसी ही अन्य बातें इस बात को प्रभावित करती हैं कि कैसे पड़ोसी के लिए प्रेम के सार्वभौमिक सिद्धान्त को लागू किया जाना चाहिए।

दूसरी तरफ, "अपने पड़ोसी को प्रेम कर" विविध तरीकों से विभिन्न परिस्थितियों में भी लागू होता है। यहाँ तक वही व्यक्ति उसके पड़ोसी को विभिन्न समयों में विभिन्न तरीकों से प्रेम कर सकता है। प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न तरह की बाधाओं,

चुनौतियों और अवसरों का सामना करता है। और ये परिस्थितियाँ हम में से प्रत्येक से बाइबल आधारित सिद्धान्तों को इस तरीके से लागू करने की मांग करती हैं जो कि अन्य परिस्थितियों में लोगों के लिए उचित न हो। उदाहरण के लिए, अपने पड़ोसी को प्रेम कर युद्ध और शान्ति के समय, बहुतायत और अकाल के समय, बीमारी और स्वास्थ्य के समय में भिन्न तरीके से होता है। पवित्रशास्त्र के उच्च सिद्धान्तों को हमारी परिस्थितियों के अनुसार भिन्न तरीकों में लागू किया जाना चाहिए।

यह देख लेने के बाद कि कैसे लोगों और परिस्थितियों में विविधता हमसे बाइबल आधारित उच्च निर्देशों को भिन्न तरीकों से लागू करने की मांग करती है, आइए हम पवित्रशास्त्र में दिए हुए यीशु के वर्गीकृत निर्देश के निम्न तत्वों की ओर मुड़ें।

निम्न निर्देश

हमारे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए, "निम्न" निर्देशों में बाइबल के विशिष्ट, विस्तृत निर्देश और ठोस ऐतिहासिक उदाहरण सम्मिलित हैं जो हमारी सहायता करते हैं कि हम स्वयं और अन्यों पर पवित्रशास्त्र को लागू करें। जैसे उच्च निर्देशों के साथ है, वैसे ही निम्न निर्देश को भी इसमें सम्मिलित लोगों और परिस्थितियों की विविधता के ऊपर निर्भर होते हुए भिन्न तरीके से लागू किया जाता है।

उदाहरण के लिए,एक विशेष निर्देश के बारे में कल्पना कीजिए जो कि इस तरह से है, "अपने परिवार के लिए एक सुरक्षित मकान का निर्माण करें।" एक व्यक्ति ठण्डे वातावरण में उस व्यक्ति से भिन्न तरह के मकान का निर्माण करेगा जो कि गरम वातावरण में है। एक चक्रवात आते हुए क्षेत्र में बना हुआ मकान विभिन्न तरह के निर्माण के ढाँचे की मांग अपेक्षाकृत ऐसे क्षेत्र से करेगा जिसमें भूकम्प आते हैं। उच्च सिद्धान्त यहाँ पर यह है कि एक व्यक्ति को उसके परिवार को सुरक्षित रखना है। विशेष निर्देश यह है कि वह इस उच्च निर्देशों की पूर्ति के लिए मकान का निर्माण करे। और जो कोई उस एक मकान को निर्माण करेगा वह अन्य उस परिस्थिति के अनुसार बने मकानों के उदाहरणों से लाभ प्राप्त करेगा। परन्तु कोई भी दो लोग अक्षरश: एक जैसे तरीके में विशेष निर्देशों के ऊपर कार्य नहीं करेंगे।

ऐसा ही कुछ हर उस समय होता है जब हम एक सम्बन्धित बाइबल आधारित विशेष शिक्षा को आज के हमारे व्यक्तिगत् जीवनों में लागू करते हैं। सर्व प्रथम, हम उच्च निर्देशों, और साथ ही निकटता से सम्बन्धित विशेष निर्देशों के ऊपर ध्यान देते हैं जो कि हमें इस शिक्षा की ओर उन्मुख करते हैं। दूसरा, हम ऐसे लोगों और परिस्थितियों का सामना करते हैं जो कि विशेष निर्देशों से वास्तव में प्रभावित हुए हैं। और तीसरा, हम हमारे जीवनों की तुलना विशेष शिक्षा को प्राप्त करने वाले मूल श्रोताओं के साथ यह समझने के लिए करते हैं कि इन्हें कैसे हमें हमारे स्वयं के जीवनों के ऊपर लागू करना है।

> **बाइबल का एक विशेष गुण यह है कि यह विशेष समय में विशेष स्थानों पर विशेष लोगों के लिए लिखी गई थी। यही केवल ऐसी पुस्तक है जो ऐसा करती है। संसार की अन्य पवित्र पुस्तकें में मात्र नुस्खे, ऐसी टिप्पणियाँ है कि लोगों को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, की प्रवृत्ति रखती हैं। परन्तु परमेश्वर ने अपनी भलाई में हमें संदर्भ दिया है। उसने हमें समझने के लिए एक तरीका दिया है कि कैसे ये बातें हमारे जीवन के लिए कार्यकारी होती हैं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें सदैव यह कहने के लिए अवसर मिल गया है कि, "अब वह सिद्धान्त क्या है जो कि इस संदर्भित परिस्थिति में सिखाया गया है? और कैसे यह हमारी नई संदर्भित परिस्थिति में लागू होता है।**
>
> **-डॉ. जॉन औसवाल्ट**

जो कुछ हमारे मन में है उसको प्रकट करने के लिए, इस बात पर ध्यान दें कि कैसे हम निर्गमन 21:23-25 को आज प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर लागू करेंगे। इन आयतों में हम पढ़ते हैं कि इस्राएल के न्यायियों ने न्याय को इस तरह से दिया:

परन्तु यदि उसको और कुछ हानि पहुँचे, तो प्राण की सन्ती प्राण का, और आँख की सन्ती आँख का, और दाँत की सन्ती दाँत का, और हाथ की सन्ती हाथ का, और पाँव की सन्ती पाँव का, और दाग की सन्ती दाग का, और घाव की सन्ती घाव का, और मार की सन्ती मार का दण्ड हो (निर्गमन 21:23-25)।

परन्तु मत्ती 5:38-39 को सुनिए, यहाँ पर यीशु ने यह शिक्षा दी कि उसके अनुयायियों को अपने पहाड़ी उपदेश में इस व्यवस्था को उनके व्यक्तिगत् जीवनों में कैसे लागू करना था।

तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था, "कि आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत।" परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उस की ओर दूसरा भी फेर दे (मत्ती 5:38-39)।

यह समझ महत्वपूर्ण है कि यीशु पुराने नियम में दी हुई न्यायियों और कानूनी व्यवस्था से असहमत नहीं है। हम सभों की तरह, यीशु जानता था कि एक न्यायलय में परमेश्वर और पड़ोसी को प्रेम एक धार्मिकता भरे हुए न्याय की मांग करता है। जिस समस्या का सामना यीशु ने किया वह यह थी कि फरीसियों ने न्यायियों की इस व्यवस्था को व्यक्तिगत् सम्बन्धों में बदला लेने के औचित्य के रूप में ले लिया था। परन्तु जब हम इस निर्देश को पवित्रशास्त्र के अन्य उच्च निर्देशों और अन्य "निम्न" निर्देशों के साथ तुलना करते हैं, तो हम समझ सकते हैं कि यीशु ने यहाँ अपने शिष्यों को क्या सिखाया। वस्तुतः, यीशु ने निहितार्थ में उसके अनुयायियों को स्वयं की तुलना निर्गमन 21 के मूल श्रोताओं के साथ करने के लिए बुलाहट दी। प्रत्येक व्यक्ति को कानूनी व्यवस्था के न्याय और निष्पक्षता का अनुमोदन करना चाहिए। और जब हम हमारे पास ऐसी भूमिकायें होती हैं जो कि न्यायी के सृदश हैं, तो हमें निर्गमन 21 को एक न्यायी की तरह एक न्यायलय में लागू करना चाहिए। परन्तु हमें हमारे व्यक्तिगत् सम्बन्धों में न्यायियों की तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए। हमारे सामान्य, व्यक्तिगत् सम्बन्धों को केवल न्याय के द्वारा नहीं, अपितु जितना ज्यादा हो सके दया और कृपा के साथ नियंत्रित होना चाहिए।

मात्र एक उदाहरण के रूप में, मत्ती 19:21 में, यीशु ने एक धनी जवान न्यायी को इस तरह का निर्देश दिया:

तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले (मत्ती 19:21)।

इस आयत का व्यापक संदर्भ यह स्पष्ट कर देता है कि यीशु ने इस निम्न निर्देश को इसलिए दिया क्योंकि वह जवान न्यायी अपने धन में इतना ज्यादा खोया हुआ था कि उसने परमेश्वर और पड़ोसी को प्रेम के उच्च निर्देश की अवहेलना की थी। और उसने धन को प्रेम करके अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बना लिया था।

लोग कई बार आश्चर्य करते हैं कि ये प्रसंग मांग करता है कि इस आधुनिक संसार का प्रत्येक धनी व्यक्ति अपनी सारी धन सम्पत्ति को बेच दे और गरीबों में बाँट दे। परन्तु हमें व्यक्तिगत् धन और सम्पत्ति के लिए पवित्रशास्त्र के उच्च सिद्धान्त को ध्यान में रखना चाहिए। हमें साथ ही इस निम्न, यीशु और नए नियम की धन सम्पत्ति के प्रति दी गई अन्य शिक्षाओं की अपेक्षा ज्यादा विशेष शिक्षा के साथ तुलना करनी चाहिए। परिणामस्वरूप, हम कैसे निर्णय करते हैं कि कौन से धनी लोगों को उनके धन के साथ क्या करना चाहिए? इसका उत्तर आज प्रत्येक व्यक्ति के धन और उनकी परिस्थितियों की तुलना में निहित है। जितना ज्यादा हम उसके सृदश बनते चले जाते हैं, उतना ज्यादा हमारा आधुनिक उपयोग उसके सृदश होता चला जाता है जिसे वह इसके दिनों में करता था।

अभी तक प्रत्येक व्यक्ति के लिए आधुनिक उपयोग के ऊपर हमने इस अध्याय में यह देखा कि, किसी एक निश्चित या अन्य सीमा तक, प्रत्येक आधुनिक व्यक्ति को पवित्रशास्त्र को विभिन्न तरीकों से प्रत्येक व्यक्ति को विविध रूप से उपयोग के

लिए लागू करना चाहिए। यह हमारा नेतृत्व दूसरे मुख्य विषय की ओर करता है: उपयोग में हमारे लिए ज्ञान की आवश्यकता।

ज्ञान

संसार के कई भागों में, मसीही विश्वासी बाइबल को उठा लेते हैं और जिस समय भी चाहें उसे पढ़ते हैं। और जितना ज्यादा यह अद्भुत हो सकता है, इसने हममें से कइयों को अत्यधिक चयनात्मक होने में नेतृत्व प्रदान किया है जब हम पवित्रशास्त्र को हमारे व्यक्तिगत् जीवनों में लागू करते हैं। हम सिद्धान्त में स्वीकार करते हैं कि सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर-द्वारा-प्रेरित है। परन्तु बाइबल के बहुआयामी निर्देशों को विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न लोगों के साथ निपटारा करने की अपेक्षा, हम केवल पवित्रशास्त्र में स्वयं के लिए आयतों को चुन लेते हैं और कुछ ऐसी बातों को देखते हैं जो कि आसानी से हमारे जीवनों के ऊपर लागू होती हैं। इस व्यापक अभ्यास को समझा जा सकता है कि क्योंकि कई बार बाइबल बहुत ज्यादा जटिलता से भरी हुई है। परन्तु वास्तविकता में, बाइबल को इस तरह से उपयोग करने के लिए नहीं लिखा गया था। परमेश्वर ने यह ठहराया था कि उसके पवित्रशास्त्र को उस समय पढ़ें जब उसे लोग एक दूसरे के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। अन्यों की सहायता से, हम लागू करने के लिए उस ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं यहाँ तक कि बाइबल के कठिन हिस्सों को भी लागू करने के लिए।

जैसा हम देखेंगे कि, यद्यपि पवित्र आत्मा हमें पवित्रशास्त्र के उपयोग के लिए असाधारण अंतर्दृष्टि को प्रदान कर सकता है, परमेश्वर ने, सामान्य तौर पर, स्पष्ट रूप से यह ठहराया कि, हमें अन्यों के साथ हमारे सम्पर्कों में उपयोग के लिए ज्ञान को प्राप्त करना है।

प्राचीन इस्राएलियों और आरम्भिक कलीसिया के पास छपाई की मशीनें नहीं थीं, न ही प्रकाशन गृह, उनके पास पवित्रशास्त्र को आज की तरह वितरित करने का कोई तरीका नहीं था। और यहाँ तक कि यदि पवित्रशास्त्र बहुत से लोगों के हाथों तक पहुँच गया होता, तौभी वे इसे पढ़ने में सक्षम न होते। परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा की कि वह यह सीखे कि पवित्रशास्त्र को कैसे समुदाय में अन्य लोगों के साथ सम्पर्क करने के द्वारा सीखा जा जाता है।

हम उन दो तरीकों का पता लगाएंगे जिसमें ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति के उपयोग के लिए अन्यों के द्वारा सम्पर्क किए जाने के द्वारा विकसित हुआ। सर्व प्रथम, हम उस भूमिका के ऊपर जिसमें परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किए गए अगुवों के रूप में पवित्रशास्त्र के मूल प्राप्तकर्ताओं को ठहराए जाने के ऊपर ध्यान देंगे। दूसरा, हम समुदाय में प्रचार, प्रसार, परमेश्वर के लोगों में पवित्रशास्त्र की आवश्यकता का पता लगाएंगे। आइए सबसे पहले प्रत्येक व्यक्ति के उपयोग के लिए अगुवों की महत्वपूर्ण भूमिका के ऊपर ध्यान दें।

अगुवे

यद्यपि इवैन्जलिकल्स अर्थात् सुसमाचारवादी सामान्य तौर पर यह सोचते हैं कि बाइबल एक पुस्तक के रूप में प्रत्येक मसीही विश्वासी के लिए निर्मित की गई है, परन्तु कई संकेतक यह सुझाव देते हैं कि बाइबल आधारित लेखकों ने बहुत ज्यादा भिन्न दृष्टिकोण से लिखा। इस्राएल में और आरम्भिक कलीसिया में परोक्ष में लिखने की अपेक्षा, पवित्रशास्त्र के लेखकों ने सर्व प्रथम परमेश्वर के लोगों के अगुवों को लिखा जिन्हें पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं के प्रचार प्रसार और वर्णन किए जाने के लिए ठहराया गया था।

हम सर्व प्रथम यह देखेंगे कि बाइबल कैसे मौलिक रूप में पुराने नियम के अगुवों को सम्बोधित की गई है और तब यह कैसे नए नियम में प्रकट हुआ है। आइए पुराने नियम के साथ आरम्भ करें।

पुराना नियम

पुराने नियम में, सामान्य तौर पर याजक, लेवी, भविष्द्वक्ता, संत, न्यायी, राजा और अन्य धार्मिक तरह के लोग ही केवल पवित्रशास्त्र का प्रथम स्तर पर अध्ययन कर और पढ़ सकते थे। इस कारण से, पुराने नियम के लेखकों ने मौलिक रूप से इस्राएल के अगुवों को सम्बोधित किया। हम इसके प्रमाण को कम से कम तीन तरीकों से देख सकते हैं।

सबसे पहले स्थान पर, वहाँ पर कई ऐसे स्पष्ट हवाले दिए गए हैं जिसमें इस्राएल के अगुवों को पुराने नियम की पुस्तकों के मूल प्राप्तकर्ता के रूप में बताया गया है।

उनमें से यहाँ कुछ उदाहरणों का उल्लेख करना, जैसे व्यवस्थाविवरण 31:9 और 2 राजा 22:9-10 ये इंगित करता है कि मूसा की व्यवस्था के पालन किए जाने को लेवीय याजकों की देखरेख में रखा गया था। और निर्गमन 21:1-23:9 में वाचा की पुस्तक में दिए हुए बहुत से निर्देशों को "निर्णय" – इब्रानी में *मिशफाटीम* कह कर पुकारा गया है – क्योंकि उन्हें न्यायियों के लिए न्यायलय में न्याय देने के लिए लिखा गया था। और नीतिवचन 1:1 और 25:1 जैसे प्रसंगों में, परिचयात्मक सूचना देता हुआ अभिलेख हमें यह प्रकट करता है नीतिवचनों को उच्च-ज्ञान प्राप्त बुद्धिमान लोगों और राजकीय व्यक्तियों के द्वारा यहूदा के राजकीय दरबार में उपयोग करने के लिए एकत्र किया गया था। ये और कई अन्य हवाले यह इंगित करते हैं कि पुराने नियम की पुस्तकों को सर्व प्रथम इस्राएल के अगुवों को ध्यान में रख कर लिखा गया था।

दूसरे स्थान पर, पुराने नियम की पुस्तकों की विषय-वस्तु भी यह प्रकट करती है कि वे मूल रूप से इस्राएल के अगुवों के लिए लिखी गई थीं।

पुराने नियम की बहुत सी पुस्तकें अपने बहुत ज्यादा समय को ऐसे विषयों के ऊपर खर्च करती हैं जिनकी इस्राएलियों के प्रतिदिन के जीवन से बहुत कम प्रत्यक्ष प्रासंगिकता थी। उदाहरण के लिए, 1 राजा 6 में दी गई मन्दिर निर्माण से सम्बन्धित लम्बे निर्देशों का इस्राएल में एक साधारण शिल्पकार या एक किसान, एक चरवाहे का जीवन मात्र अप्रत्यक्ष रूप से ही सम्बन्ध है। बहुत कुछ इसी तरह से, सभोपदेशक का धन, प्रसन्नता, प्रसिद्धि और इस तरह की निरर्थकता का पीछा करना उन चुनौतियों से बहुत दूर था जो कि इस्राएली पुरूषों और स्त्रियों की एक बहुत बड़ी सँख्या सामना कर रही थी। उन निर्देशों को देने की अपेक्षा जो प्रत्यक्ष में इस्राएल में प्रत्येक व्यक्ति द्वारा आवश्यकताओं और चुनौतियों का सामना किए जाने के लिए बात करती, पुराने नियम की पुस्तकों का बहुत ज्यादा विषय-वस्तु प्रत्यक्ष में बहुत ज्यादा इस्राएल के अगुवों के द्वारा आवश्यकताओं और चुनौतियों का सामना करने से सम्बन्धित है।

तीसरे स्थान पर, पुराने नियम की पुस्तकों की जटिलतायें यह भी प्रकाशित करती हैं कि वे मौलिक रूप से इस्राएल के उन अगुवों के लिए निर्मित की गईं जो कि प्रतिभाशाली, अनुभवी और बुद्धिमान थे।

यह भी सुनिश्चित हो कि, पुराने नियम के बहुत से हिस्से इतने ज्यादा साधारण हैं कि यहाँ तक कि इसे बच्चे भी समझ सकते हैं। परन्तु जो कोई भी पुराने नियम से सम्बन्धित है वह यह जानता है कि पुराने नियम की बहुत सी पुस्तकों में ऐसी जटिलतायें हैं जो कि यहाँ तक कि विशेषज्ञता से भरे हुए पाठकों को भी चुनौती दे देती हैं। मात्र एक उदाहरण के लिए, यशायाह और यिर्मयाह जैसी भविष्यद्वाणी की पुस्तकें इतनी ज्यादा पेचीदा रूप से निर्मित हैं कि एक औसत इस्राएली भी उनसे विस्मत हो जाता है। कुल मिलाकर, यह स्पष्ट है कि पुराने नियम की पुस्तकें इस्राएल में प्रत्यक्ष रूप से प्रत्येक व्यक्ति के लिए निर्देशों को देने के लिए ही नहीं, अपितु मौलिक रूप से राष्ट्र के अगुवों को निर्देश देने के लिए लिखी गई थीं।

कई तरह से, इस्राएल के पाठकों की तरह ही जो कि पुराने नियम के लेखकों के प्रथम श्रोता थे, नए नियम के लेखकों ने भी उनकी पुस्तकों को कलीसिया के अगुवों अर्थात् प्रेरितों, भवष्यद्वक्ताओं, प्रचारकों, पासबानों, शिक्षकों, प्राचीनों, डीकनों और अन्य नेतृत्व प्रदान कर रहे लोगों के लिए लिखी थी।

नया नियम

सबसे पहले स्थान पर, नए नियम की पुस्तकें कलीसिया के अगुवों को उनके मूल प्राप्त कर्ता के रूप में स्पष्ट हवाले देती हैं।

उदाहरण के लिए, 1 और 2 तीमुथियुस के पत्र तीमुथियुस को सम्बोधित किए गए हैं, जो कि पौलुस का "विश्वास में पुत्र" था। और तीतुस की पुस्तक पौलुस के ऊपर आश्रित तीतुस को सम्बोधित की गई है। दोनों व्यक्ति आरम्भिक कलीसिया में प्रभावशाली अगुवे बन गए थे।

यहाँ पर पौलुस के तीन ऐसे पत्र हैं जिन्हें व्यक्तिगत् पत्र कह कर जाना जाता है, क्योंकि वे प्रथम शताब्दी में रहने वाले पासबानों, तीमुथियुस और तीतुस को लिखे गए थे। इसलिए, 1 तीमुथियुस 2 तीमुथियुस और तब तीतुस की पुस्तक...इसलिए यदि पौलुस विशेष रूप से इफिसुस से दूर है, तो वह उस व्यक्ति के लिए बहुत ज्यादा चिन्तित हो जाता था जिसे वह इफिसुस की कलीसिया की जिम्मेदारी के रूप में छोड़ आया था। वह कौन था? जवान तीमुथियुस। परिणामस्वरूप वह 1 तीमुथियुस को उत्साह देने, उसके इस विशेष कार्य को पूरा करने के लिए सामर्थ्य देने के लिए लिखता है। और वह तीतुस को भी लिखता है, जो "उसका दूसरे नम्बर" पर पुत्र है, यदि आप उसे इस तरह देखना चाहें तो, और वह तीमुथियुस कि अपेक्षा कई तरीकों से ज्यादा विश्वसनीय चरित्र है, शारीरिक रूप से ज्यादा शक्तिशाली है, परन्तु उसे भी कार्य को पूरा करने के लिए उत्साह दिए जाने की आवश्यकता है, उसका उन क्षणों में कार्य क्रेते के द्वीप में रहने वाले कुछ मसीही विश्वासियों को चुनना और उनकी समस्याओं का समाधान करना था। इसलिए, तीतुस को पत्र लिखा गया है। इस तरह से, मैं देखता हूँ कि पौलुस के द्वारा लिखे हुए ये दो पत्र उसकी यात्रा के दौरान उसके दो मुख्य समर्थकों, तीमुथियुस और तीतुस को लिखे गए हैं, जब वह इकुनियुम की ओर और यूनान की ओर यात्रा कर रहा था।

-डॉ. पीटर वॉकर

दूसरे स्थान पर, नए नियम की पुस्तकों की विषय-वस्तु कलीसिया के अगुवों को प्रथम प्राप्तकर्ता के रूप में भी संकेत देती है।

जब हम नए नियम की पुस्तकों के ऊपर उनके ऐतिहासिक संदर्भ में ध्यान देते हैं, तो यह देखना कठिन नहीं है कि वे अक्सर ऐसे विषयों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हैं जो कि प्रथम शताब्दी के ज्यादात्तर विश्वासियों से अपरिचित थे। मात्र एक उदाहरण के तौर पर, नए नियम की बहुत सी पुस्तकें व्यापक रूप से अन्यजाति की मण्डलियों को, ऐसे लोगों को लिखी गई थीं जिनको पुराने नियम का ज्ञान बहुत कम था। परन्तु फिर भी, नए नियम के लेखक पुराने नियम के मूलपाठ की ओर हजारों बार संकेत करते हैं, और अक्सर थोड़े से विवरण के साथ, ऐसी उच्च संभावना की गई है कि नए नियम के लेखकों ने बुद्धिमान अगुवों से यह अपेक्षा की है कि वे इन और अन्य निर्देशों को समझने में ऐसे सक्षम थे जो बहुत से आरम्भिक विश्वासियों के लिए अपरिचित थे।

तीसरे स्थान पर, नए नियम के निर्देशों की जटिलतायें यह भी संकेत देती हैं कि उनके मूल प्राप्तकर्ता शिक्षित और बुद्धिमान अगुवे भी थे।

यद्यपि नए नियम का बहुत सा हिस्सा आसानी से समझा जा सकता है, परन्तु इसके कई भाग आरम्भिक विश्वासियों को समझने के लिए अत्यन्त कठिन थे। यहाँ तक कि प्रेरित पतरस ने 2 पतरस 3:16 में अपनी प्रसिद्ध टिप्पणी दी है कि **"[**पौलुस**]** ने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है जिन में कितनी बातें ऐसी हैं**,** जिनका समझना कठिन है।" समय समय पर नए नियम के लेखकों ने ऐसी धर्मवैज्ञानिक विशेषज्ञता लिखा है कि उनके पत्र बड़ी आसानी से साधारण विश्वासियों की पहुँच से परे थे। और इसी कारण से, कलीसिया में वरदान प्राप्त शिक्षक पवित्रशास्त्र को सिखाने और इसका वर्णन करने के लिए जिम्मेदार उनके लिए थे जो पढ़ नहीं सकते और स्वयं इन्हें समझ नहीं सकते थे।

यह जानने के बाद की परमेश्वर के लोगों के अगुवे बाइबल आधारित पुस्तकों को मूल रूप से प्राप्त करने वाले थे के आधुनिक विश्वासियों के लिए बहुत से निहितार्थ हैं। कलीसियाई इतिहास ने पवित्रशास्त्र के दुरूपयोग को प्रदर्शित किया है जो कि उस समय उठ खड़ा होता है जब प्रत्येक विश्वासी उसके अगुवों के ऊपर बहुत ज्यादा निर्भर हो जाता है। परन्तु हमें दूसरे चरम की ओर नहीं जाने के लिए भी सावधान रहना चाहिए और यह अनुमान नहीं लगाना चाहिए कि हमें मसीही विश्वासी अगुवों की आवश्यकता नहीं है।

बहुत कुछ ऐसे जैसे परमेश्वर के ठहराए हुए अगुवों ने बाइबल के समयों में पवित्रशास्त्र के अपरिचित विषय वस्तु और जटिताओं का निष्पादन किया, मसीह के आधुनिक विश्वासियों को अनुभव प्राप्त अगुवों, जो कि उन्हीं कारणों से, पवित्रआत्मा के ज्ञान और बुद्धि से आशीषित हों, की आवश्यकता है।

सच्चाई तो यह है कि, यहाँ तक हमारे हाथ में बाइबल – जिसमें इब्रानी, अरामी, और यूनानी मूलपाठ भी सम्मिलित हैं को जिसे हम में से कुछ ही लोग पढ़ सकते हैं – हमारे पास मूलपाठ की आलोचना, क्रमबद्ध व्यवस्था, संपादन और मूलपाठ के प्रकाशन के क्षेत्र में कार्यरत् अग्रणी विद्वानों, विशेषज्ञ अगुवों के द्वारा पहुँची है। और इससे भी ज्यादा, पवित्रशास्त्र के आधुनिक अनुवाद जिन्हें बहुत से मसीही विश्वासी आज के समय पढ़ते हैं प्राचीन इब्रानी, अरामी और यूनानी और अनुवाद की कला में निपुण अग्रणी विशेषज्ञों के कार्यों का परिणाम हैं।

यद्यपि कई तरीकों से पवित्रशास्त्र का व्यक्तिगत् अध्ययन बहुत ज्यादा मूल्यवान है, परन्तु विश्वासयोग्य अगुवों की पहचान और उन वरदानों से लाभ प्राप्त करने के लिए कोई विकल्प नहीं है जिन्हें पवित्रआत्मा ने उन्हें दिए हैं जब हम पवित्रशास्त्र को हमारे आज के दिनों में लागू करने की कोशिश करते हैं।

अगुवे को चाहिए कि वह प्रत्येक बात में एक नमूने को प्रस्तुत करे: अर्थात् प्रेम में, धार्मिकता में, प्रार्थना में, और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि शिक्षण और सिद्धान्त के उपयोग में। वहाँ वृद्धि के लिए एक उदाहरण होना चाहिए...इसी कारण से, प्रेरित पौलुस ने अपने ध्यान को तीमुथियुस के ऊपर केन्द्रित किया और उसे सुझाव दिया कि वह अपने जीवन में किसी से भी भय न खाए क्योंकि वह जवान था। इस पर उसने उससे कहा कि वह औरों के लिए एक नमूने को स्थापित करे। यह एक अगुवे के जीवन के लिए बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण है।

-डॉ. युसेफ औहुरामेने, अनुवादित किया हुआ

हम सभों को इब्रानियों 13:17 में दिए हुए उपदेश पर ध्यान लगाना चाहिए:

अपने अगुवों की मानो; और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उन की नाई तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठण्डी सांस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं (13:17)।

यह देख लेने के बाद कि उपयोग में ज्ञान के विकास में परमेश्वर की ओर से ठहराए हुए अगुवों के साथ सम्पर्क सम्मिलित है, आइए हम हमारे दूसरे मुद्दे की ओर मुड़ते हैं: जो कि समुदाय में बाइबल आधारित शिक्षाओं के उपयोग और प्रसार की आवश्यकता के ऊपर है।

समुदाय

इस्राएल और आरम्भिक कलीसिया में प्रत्येक साधारण व्यक्ति के पास पवित्रशास्त्र तक प्रत्यक्ष पहुँच नहीं थी। इसलिए, उन्होंने कैसे अपने जीवनों में पवित्रशास्त्र को लागू किया? संक्षेप में कहना, बाइबल के लेखकों ने इस अपेक्षा से लिखा कि अगुवे पवित्रशास्त्र का प्रचार और प्रसार करेंगे ताकि परमेश्वर के लोग समाज में उन्हें एक साथ स्वयं पर लागू कर लें।

हम व्यक्तिगत् रूप से पवित्रशास्त्र के उपयोग के लिए समाज की महत्वपूर्णता को यह देखते हुए देखेंगे कि कैसे पवित्रशास्त्र पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के समुदाय द्वारा साझा किया गया। और तब, हम यह पता लगाएंगे कि कैसे वह नए नियम में प्रसारित हुआ। आइए पुराने नियम के साथ आरम्भ करें।

पुराना नियम

जब बात पुराने नियम की आती है, तो हम जानते हैं कि बहुत सी कहानियाँ, व्यवस्थाएँ, भजन संहिता, भविष्यद्वाणी के भाषण और ऐसी ही अन्य बातें मौखिक रूप से प्रसारित हुईं इससे पहले कि उन्हें बाइबल की पुस्तकों के रूप

में एकत्र कर लिया जाता। परन्तु इस अध्याय में, हम इस बात में ज्यादा रूचि रखते हैं कि कैसे इन शिक्षाओं के लिखित अभिलेखों का प्रसार उन पाठकों से आगे हुआ जिन्होंने इन्हें सबसे पहले पढ़ा था।

ऐसे बहुत से सुराग हमें मिलते हैं जो हमें यह समझने में सहायता करते हैं कि कैसे पुराने नियम की पुस्तकें इस्राएल के विस्तृत समाज में वितरित की गई थीं। उदाहरण के लिए, व्यवस्था विवरण 31:9-29 में, मूसा ने सबसे पहले परमेश्वर की व्यवस्था को लेवीय याजकों को दिया। मूसा ने तब लेवीय याजकों को निर्देश दिया कि वे मिलाप वाले तम्बू के त्यौहार के समय व्यवस्था को पढ़ कर सुनाएं ताकि पुरूष, स्त्री और बच्चे उन्हें सुन सकें और व्यवस्था को सीख सकें। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर ने मूसा को यह भी आदेश दिया था कि वह व्यवस्था में दी हुई आशीषों और श्रापों को एक गीत में लिखे ताकि लोग इसे गा कर इसे परमेश्वर की उनके लिए दी हुई इच्छा के लिए निरन्तर गवाह के रूप में ठहरें।

इससे भी आगे, व्यवस्था विवरण 17:8-13 जैसे प्रसंग यह इंगित करते हैं कि इस्राएल के न्यायलयों में लेवियों और न्यायियों को परमेश्वर की व्यवस्था को लोगों के ऊपर लागू कराना था और सामान्य जनसँख्या को व्यवस्था के निहितार्थों के बारे में निर्देश दिए गए थे। और 1 राजा 3:16-28 में एक ऐसे ही सदृश अभ्यास को राजकीय दरबार में प्रदर्शित किया गया है। 2 राजा 23:1-3 इंगित करता है कि वाचा के नवीकरण के समयों में राजा पवित्रशास्त्र को ऊँची आवाज में लोगों को पढ़ कर सुनाया करता और व्यवस्था के लागू किए जाने के लिए निर्देश दिया करता था। एज्रा 10:16 यह प्रगट करता है कि जनजातिय अगुवों ने परमेश्वर के वचन को उन लोगों के जीवनों में लागू किया जिनकी वे सेवा करते थे। माता पिता को निर्गमन 12:27 में आदेश दिया गया है कि वे अपने बच्चों को फसह के रीति विधानों की शिक्षा दें। वास्तव में, व्यवस्था विवरण 6:6-9 के निर्देशों यह प्रगट करते हैं कि प्रत्येक अवसर पर बच्चों को व्यवस्था सिखाना था।

और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, जैसे ही इस्राएल की सामान्य जनसँख्या के पास पवित्रशास्त्र के निर्देश पहुँचते थे, तो उस समय समाज के सदस्य एक दूसरे को जो कुछ वे पवित्रशास्त्र की शिक्षा के बारे में जानते थे का अनुसरण करने के लिए एक दूसरे को उत्साहित करते थे।

पुराना नियम यह भी जोर देता है कि परमेश्वर के वचनों को लोगों को अपने हृदयों में रखना था। इसी कारण से, पुराने नियम के बहुत से भाग स्मरण करने के रूप में निर्मित किए गए हैं। छोटी कहानियाँ, दस आज्ञायें, भजन संहिता और नीतिवचन, और साथ ही साथ भविष्यद्वाणियों के कई भाषणों को, गीतों और दृष्टान्तों को इस्राएल के समाज के द्वारा स्मरण किया जाना था। इस तरीके से, प्रत्येक विश्वासयोग्य व्यक्ति परमेश्वर के निर्देशों को अपने हृदय में उसके वचन के ऊपर मनन करने और इसमें हर्षित होने के द्वारा रखने के लिए सक्षम था। केवलमात्र एक उदाहरण के रूप में भजन संहिता 119:11-16 के वचनों को सुनिए:

> **मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरूद्ध पाप न करूँ। हे यहोवा, तू धन्य है; मुझे अपनी विधियाँ सिखा... तेरे सब कहे हुए नियमों का वर्णन, मैं ने अपने मुँह से किया है... मैं तेरी चितौनियों के मार्ग से, मानों सब प्रकार के धन से हर्षित हुआ हूँ। मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूँगा, और तेरे मार्गों की ओर दृष्टि रखूँगा। मैं तेरी विधियों से सुख पाऊँगा; और तेरे वचन को न भूलूँगा (भजन संहिता 119:11-16)।**

इस प्रसंग में, भजनकार वर्णन करता है कि परमेश्वर के वचन को हृदय में छिपाने का क्या अर्थ होता है। "वह [उसके] कहे हुए नियमों का वर्णन [करता है], मैं ने अपने मुँह से [करता] है।" उसने [परमेश्वर की] "चितौनियों के मार्ग से," मानों सब प्रकार के धन से हर्षित हुआ हूँ। "मैं [परमेश्वर] के उपदेशों पर ध्यान करूँगा" जब उसने इन्हें अपने व्यक्तिगत् जीवन में लागू करने की कोशिश की।

समग्र मनुष्य जाति पाप से प्रभावित है। और इसलिए मैं भजन संहिता 119 के विषय में ऐसा सोचता हूँ, कि यह हमारे लिए पवित्रशास्त्र तक पहुँचने के लिए एक नमूना भरा तरीका है, हमारे पास बार बार, भजनकार ऐसी प्रार्थना करता हुआ मिलता है, "मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूँ...मेरी आँखों को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

व्यर्थ वस्तुओं और निर्रथक वस्तुओं की ओर से फेर दे।" पवित्रशास्त्र हमें परमेश्वर की ओर हमारे हृदयों और मनों को पाप से भरी हुई बातों की ओर से मुड़ कर उसे खोजने के लिए एक नमूना प्रस्तुत करता है, जिससे हम सजग रहें कि हम पवित्रशास्त्र के अर्थ को अनर्थ कर सकते हैं, इसे ऐसा करने, कहलवाने की कोशिश कर सकते हैं जिसे हम सुनना चाहते हैं और स्वयं के व्यवहार को न्यायसंगत ठहरा सकते हैं...इस तरह से हम देखते हैं कि हमारे पाप प्रभु के साथ हमारे सम्बन्ध को प्रभावित करते हैं और परमेश्वर हमें अन्यों को क्षमा करने, उस अनुग्रह के साथ अन्यों के साथ व्यवहार करने लिए के लिए बुलाहट देता है जिसे वह हमें देता है।

-डॉ. राबर्ट ऐल. प्लूमेर

अब क्योंकि हमने यह ध्यान दे दिया है कि परमेश्वर के लोगों का सुमदाय पवित्रशास्त्र में दिए हुए पुराने नियम के प्रसार में कितना ज्यादा महत्वपूर्ण है, इसलिए आइए हम अब नए नियम की कलीसिया में मिलने वाले सदृश अभ्यास को देखें।

नया नियम

एक बड़ी सीमा तक, आरम्भिक कलीसियाई समाज ने जिस तरह से पवित्रशास्त्र को प्राप्त किया था उसी के अनुसार इसके अभ्यास को प्रथम शताब्दी के सभाघरों में उपयोग किया। कलीसिया के अगुवे इसके पठन् और पवित्रशास्त्र का वर्णन देने के लिए जिम्मेदार थे ताकि परमेश्वर का वचन पूरे समाज में प्रसारित हो जाए। हम इस पद्धति को यीशु की लूका 4:14-29 में नासरत के यहूदी आराधनालय में दी गई जानी पहचानी कहानी में देखते हैं। इन आयतों में, लूका ने यह ब्यौरा दिया है कि यीशु ने आराधनालय में एकत्र हुए लोगों के साथ इसमें भाग लिया। आराधनालय के अगुवों ने उसके हाथ में एक कुण्डल पत्र को पकड़ा दिया और यीशु कर्तव्यविमूढ़ खड़े हो गया और यशायाह के हिस्से से पढ़ता है, जिसे उन्होंने उसे दिया था। तब, मेजबान को कुण्डल पत्र वापस करने के बाद में, यीशु नीचे बैठ गया और वर्णन करने लगा कि कैसे पढ़े गए शब्द आराधनालय में आए हुए लोगों के ऊपर लागू होते हैं।

नए नियम के प्रसंगों की एक सँख्या यह इंगित करती है कि आरम्भिक मसीही कलीसियाओं ने आराधनालयों में प्रचलित शिक्षण की पद्धति की ही नकल की। केवल उदाहरण मात्र के लिए, पौलुस के कुलुस्सियों 4:16 में दिए हुए निर्देशों को सुनिए:

और जब यह पत्र तुम्हारे यहाँ पढ़ लिया जाए, तो ऐसा करना कि लौदीकिया की कलीसिया में भी पढ़ा जाए, और वह पत्र जो लौदीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ना (कुलुस्सियों 4:16)।

यहाँ हम देखते हैं कि पौलुस ने यह अपेक्षा की कि कुलुस्से की कलीसिया के द्वारा उसके पत्र को पढ़ लेने के बाद "लौदीकिया की कलीसिया – या मण्डली - में भी उसका यह पत्र पढ़ा जाए।" जैसा कि यह प्रसंग प्रकट करता है कि, नए नियम के लेखकों ने इस अपेक्षा के साथ लिखा कि कलीसिया के अगुवे कलीसिया की सभाओं में उनकी पुस्तकों को पढ़ेंगे और इनकी व्याख्या करेंगे।

बाइबल को प्रत्येक व्यक्ति के पास पहुँचाने और उन्हें इसका अध्ययन स्वयं से करने के लिए घर भेज देने की अपेक्षा, आरम्भिक विश्वासियों ने पवित्रशास्त्र को सीखा और मूल रूप से समाज में पवित्रशास्त्र को उनके अगुवों के निरीक्षण के अधीन रहते हुए सार्वजनिक पठन् और व्याख्याओं के द्वारा लागू किया। और जब उन्होंने परमेश्वर के लोगों में इन्हें प्रसारित किया तब परिवार के सदस्यों, मित्रों और पड़ोसियों ने एक दूसरे की सहायता इन शिक्षाओं को लागू करने में की।

अधिकतर पुराने नियम की तरह, समाज के आपसी सम्पर्क ने आरम्भिक कलीसिया में विश्वासियों को व्यक्तिगत् मनन के अभ्यास के द्वारा प्रशिक्षित कर दिया। आरम्भिक विश्वासियों ने नए नियम की शिक्षाओं को स्मरण किया और उनके व्यक्तिगत् जीवनों के लिए इसकी महत्वपूर्णता के ऊपर मनन किया। यह वह एक कारण है जिसमें नए नियम में दिए हुए यीशु

के दृष्टान्त और मत्ती 5 में दिए हुए धन्य वचन और मत्ती 6 में दी हुई प्रभु की प्रार्थना आसानी से स्मरण हो सकती है। यह हमारी सहायता करता है कि क्यों ऐसे प्रसंगों की एक सँख्या प्रगट होती है जो कि आरम्भिक विश्वासियों के लिए भजन के रूप में लिखे हुए हैं जैसे फिलिप्पियों 2:6-11 और कुलुस्सियों 1:15-20। और यह, यह भी वर्णन करता है कि क्यों पौलुस के 2 तीमुथियुस 2:11-13 में दिए हुए शब्द कलीसिया के लिए जाने पहचाने जैसे जान पड़ते हैं।

2 तीमुथियुस 2:7 में, पौलुस प्रेरित परोक्ष में मनन के अभ्यास की ओर संकेत करता है और परमेश्वर की ओर से पवित्रशास्त्रीय अंतर्दृष्टि की खोज कर रहा है। सुनिए उसने वहाँ पर क्या लिखा है:

जो मैं कहता हूँ, उस पर ध्यान दे और प्रभु तुझे सब बातों की समझ देगा (2 तीमुथियुस 2:7)।

पौलुस जो कुछ उसने लिखा उसके ऊपर "ध्यान" देने के लिए तीमुथियुस को बुलाहट देता है। और पौलुस ने यह अपेक्षा की कि "प्रभु [तीमुथियुस] को सब बातों [की] समझ दे देगा।" इस ध्यान के द्वारा, प्रभु तीमुथियुस को पौलुस के द्वारा प्रेरित वचन की विशेषता की शिक्षा देगा ताकि तीमुथियुस उसके व्यक्तिगत् जीवन में लागू कर सके।

जैसा कि हमने पहले देख लिया है, जिस तरह से प्राचीन इस्राएलियों और आरम्भिक विश्वासियों ने पवित्रशास्त्र को उनके व्यक्तिगत् जीवनों में लागू किया वह आज के हमारे सामान्य अभ्यासों से बहुत ज्यादा भिन्न है। इस्राएल और आरम्भिक कलीसिया के अगुवों ने सर्व प्रथम पवित्रशास्त्र को प्राप्त किया था और फिर उसके हिस्सों को परमेश्वर के लोगों के विस्तृत समाज में प्रसारित कर दिया। और अन्य लोगों के साथ आपसी सम्पर्कों के संदर्भ में, उन्हें पवित्रशास्त्र जिसे वे इस अपेक्षा से जानते थे कि परमेश्वर उनका नेतृत्व इनके उपयोग में उनके व्यक्तिगत् जीवनों के लिए कर रहा था को स्मरण करना और इसके ऊपर मनन करना था। इसलिए, इन अभ्यासों का हमारे आज के दिनों के लिए क्या निहितार्थ हैं? हम उन तरीकों के बारे में क्या कहते हैं जिनमें हमें पवित्रशास्त्र को हमारे व्यक्तिगत् जीवनों में लागू करना चाहिए?

कम से कम तीन निहितार्थ उनके लिए हमारे मनों में आते हैं जो कि उनके व्यक्तिगत् जीवनों में पवित्रशास्त्र को लागू करने के लिए आवश्यक ज्ञान को प्राप्त करने की आशा करते हैं।

सर्व प्रथम, मसीह के आधुनिक अनुयायियों को यह सीखना चाहिए कि हमें कितना ज्यादा पवित्र आत्मा से वरदान प्राप्त अगुवों की आवश्यकता है जो कि हमारे लिए पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं को लाए। हमने देखा कि बाइबल के मूल श्रोताओं को उनके लिए अगुवों की आवश्यकता थी जो कि उनकी सहायता अपरिचित और जटिल शिक्षाओं को समझाने में करें। यदि यह बाइबल के दिनों में रहने वाले लोगों के साथ सत्य था, तो यह निश्चित रूप से हमारे आज के दिनों के लिए भी सत्य है। हम बाइबल को अपने हाथ में पकड़ सकते हैं, परन्तु हमें फिर भी ज्ञानवान् और अनुभव प्राप्त अगुवों की आवश्यकता है जो कि पवित्रशास्त्र को हमारे आज के जीवनों में इसे लागू करने के लिए सहायता प्रदान करें।

दूसरे स्थान पर, मसीह के आधुनिक अनुयायियों को विस्तृत मसीही समाज, अर्थात् मसीह की देह में आपसी सम्पर्कों की महत्वपूर्णता की पुष्टि करने की आवश्यकता है, जब वे पवित्रशास्त्र को लागू करने की कोशिश करते हैं। इन अर्थों में, एक पुरानी कहावत बिल्कुल सत्य ठहरती है। एक आँख की बजाए दो आँखों का होना अच्छा है। वास्तव में, तीन, चार, पाँच...एक हजार आँखों का होना एक आँख से ज्यादा सर्वोत्तम है। सामान्य तथ्य यह है: कि किसी एक या अन्य निश्चित समय पर मसीह के प्रत्येक अनुयायी ने एक विशेष उपयोग को ही उपयुक्त उपयोग होने के बारे में सोचा है, परन्तु उन्होंने केवल अन्यों के साथ आपसी सम्पर्क से यही पाया है कि ऐसा नहीं था। जब हम यह स्मरण करते हैं कि मसीह की देह उसकी आत्मा का मन्दिर है, तो हम यह जान जाते हैं कि आधुनिक विश्वासियों के लिए एक सर्वोत्तम बात अन्य विश्वासयोग्य विश्वासियों के साथ आपसी सम्पर्क करना है जब वे उनके जीवनों में पवित्रशास्त्र को लागू करते हैं।

2 पतरस 3:16 में पतरस, पौलुस के पत्रों के बारे में बात कर रहा है। वहाँ वह ऐसे कहता है कि:

वैसे ही उस ने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है जिन में कितनी बातें ऐसी है, जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्रशास्त्र की और बातों की नाईं खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं (2 पतरस 3:16)।

कई बातों में से एक जिसके बारे में बात करना चाहता हूँ वह यह है कि यह आयत हमें स्मरण दिलाती है कि पवित्रशास्त्र की कुछ बातों को समझना कठिन है। ऐसा नहीं है कि उन्हें समझना असम्भव है, अपितु कुछ कठिन हैं, और यह सम्भव है कि पवित्रशास्त्र के अर्थ का अनर्थ हो जाए, यह आपको किसी ऐसे मार्ग में डाल दे जिसके प्रति आप विश्वायोग्य न हों जिसके प्रेरणा प्रदत अर्थ हैं। और यह हमारे स्मरण के लिए बहुत अच्छा है, कि हमें मसीह की देह की आवश्यकता है, क्योंकि पूरे नए नियम में, दोनों अर्थात् स्पष्ट और अस्पष्ट अपेक्षाएँ मिलती हैं जिन्हें हमें एक दूसरे विश्वासियों के साथ इकट्ठी करनी हैं। बहुत सारे प्रसंग – 1 कुरिन्थियों 12-14, रोमियों 14, इफिसियों 4 में विभिन्न आत्मिक वरदानों के बारे में बात करते हैं जिन्हें परमेश्वर उसकी देह को देता है। उनमें से एक वरदान जिसे परमेश्वर मसीह की देह के लिए इफिसियों 4 के अनुसार देता है, पासबान और शिक्षक हैं। ऐसा कहने से यह इन्कार करना नहीं कि विश्वासियों को पवित्र आत्मा दिया गया है और उन्हें पवित्रशास्त्र को पढ़ने और समझने के लिए बुलाया गया है, परन्तु कुछ लोग विशेष रूप से पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने के लिए वरदान प्राप्त किए हुए हैं और हमारी सहायता करने के लिए कि वहाँ पर क्या निहितार्थ है।

-डॉ. ऐल. प्लूमेर

तीसरे स्थान पर, मसीह के आधुनिक विश्वासियों को उपयोग में ज्ञान को प्रत्येक व्यक्ति के अभ्यास को नवीकरण करने, प्रार्थनापूर्वक पवित्रशास्त्र के मनन के द्वारा भी प्राप्त करने की आवश्यकता है। यद्यपि अगुवों के साथ और मसीह की विस्तृत देह के साथ आपसी सम्पर्क बहुत ही महत्वपूर्ण हैं, प्रत्येक मसीही विश्वासी जो कुछ उसके किया उसका लेखा जोखा स्वयं देगा। परिणामस्वरूप, अन्त में, प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोग, जैसा पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा, कि "प्रभु [हमें] समझ देता है" से कुछ भी कम नहीं होना चाहिए जिससे हम यह चाहते हों कि हम स्वयं कुछ अलग करें। प्रार्थना से भरे हुए मनन के द्वारा, परमेश्वर का आत्मा हमें समझ और हृदय में महसूस होने वाले विश्वास की दृढ़ता को देगा कि हम पवित्रशास्त्र को उन तरीकों में लागू कर रहे हैं जिनसे वह प्रसन्न होता है।

पवित्रशास्त्र का पठन् इसके प्रति जागरूक होना है, और यही आरम्भ करने का स्थान भी है; आपको यह करना है। परन्तु मनन पवित्रशास्त्र को स्वयं में अवशोषित कर लेना है। और पवित्रशास्त्र का अवशोषण जीवन को परिवर्तित कर देने में हमारा नेतृत्व करता है जिसे हम परमेश्वर के वचन के साथ प्रतिदिन के समय में पाने की आशा करते हैं। और परमेश्वर का अनुभव करने में हमारी सहायता करता है। यह मनन के द्वारा ही है कि हम प्रभु की भलाई के स्वाद को चखते और देखते हैं। पृष्ट के ऊपर दी हुई सूचना उस क्षण प्रभु के साथ भक्तिपूर्वक अनुभव बन जाते हैं और जीवन में परिवर्तन को लाते हैं। और मेरा अनुभव यह रहा है कि बहुत से विश्वासी, यहाँ तक कि बहुत ज्यादा बाइबल का पठन् करने वाले बहुत ज्यादा पाठक, भी मनन नहीं करते हैं...वे मात्र बाइबल का ही पठन नहीं करते हैं; अपितु पवित्रशास्त्र का मनन करते हैं।

-डॉ. डोनाल्ट ऐस. व्हिटनी

सारांश

प्रत्येक व्यक्ति के लिए आधुनिक उपयोग के ऊपर इस अध्याय में हमने स्वयं और अन्यों के जीवनों के ऊपर पवित्रशास्त्र को लागू किए जाने के लिए दो आयामों को देखा। हमने यह ध्यान दिया कि व्यक्तिगत् उपयोग में पवित्रशास्त्र की विविधता का लेना देना बाइबल आधारित निर्देशों की विविधता और इसमें सम्मिलित लोगों और परिस्थितियों की विविधिता के साथ है। और हमने साथ ही यह भी खोज की कि कैसे बाइबल आधारित उपयोग में ज्ञान परमेश्वर की ओर से ठहराए हुए अगुवों के साथ और परमेश्वर के लोगों के समाज के साथ हमारे सम्पर्कों के ऊपर निर्भर करता है जो हमारी तब सहायता करते हैं जब हम प्रार्थनापूर्वक पवित्रशास्त्र के ऊपर परमेश्वर की उपस्थिति में मनन करते हैं।

बाइबल परमेश्वर की ओर से एक अद्भुत उपहार के रूप में दिया गया है, जो कि केवलमात्र हमारे निर्विवाद रूप से हमारे विश्वास और जीवन का मापदण्ड है। और कोई पैमाना हमारी व्यक्तिगत् अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को परमेश्वर की सेवा करने के लिए हमारा मार्गदर्शन करने के लिए पर्याप्त नहीं है। पवित्रशास्त्र सबसे पहले विविध निर्देशों के साथ भरा पड़ा है जिनकी हमें तब आवश्यकता है जब हम जीवन की विविधताओं का निष्पादन करते हैं। और परमेश्वर ने हमारे लिए ज्ञान के रूप में एक मार्ग का प्रबन्ध किया है कि हमें पवित्रशास्त्र की इस विविधता के साथ निष्पादन हमें इसे सीखने और पवित्रशास्त्र को समाज में एक दूसरे के ऊपर लागू करने के द्वारा बुलाहट के द्वारा करना है। यदि हम इस दृष्टिकोण को अपने ध्यान में रखेंगे, तो हम पवित्रशास्त्र को परमेश्वर के लिए हमारी हमारे जीवनों में प्रतिदिन की व्यक्तिगत् सेवकाई को लागू करने के लिए प्रशिक्षित हो जाएंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम